



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...



रचनाकार :-

डा. होशियार सिंह यादव..

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - डा. होशियार सिंह यादव

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

"मोबाइल आंखों और दिमाग का दुश्मन"



आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "मोबाइल आंखों और दिमाग का दुश्मन

-भावी पीढ़ी की आंखें व दिमाग हो रहा है कमजोर

--डा. होशियार सिंह यादव--

आज के दिन हर शख्स के पास मोबाइल जरूर मिलता है। गरीब से गरीब एवं अमीर से अमीर सभी की चाहत मोबाइल बन गई है। चाहे बुजुर्ग आज भी मोबाइल और उस पर विभिन्न टूल्स देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। लेकिन मोबाइल आज की पीढ़ी के सिर चढ़कर बोलता है। मोबाइल से पहले टेलीफोन आए फिर मोबाइल आए और दोनों के बीच में संचार के कई साधन भी आए। जब से मोबाइल आया है तभी से सभी को दीवाना बना दिया है। इसके नुकसान तो भावी पीढ़ी में देखने को मिलेंगे। लाभ कम होते हैं। सबसे पहले फोन का अविष्कार किया गया।

टेलीफोन क्रांति--

टेलीफोन के आविष्कार से पहले, किसी भी दूरी पर बोलकर संवाद करना असंभव था। 1876 में लैंडलाइन और उससे कुछ दशक पहले टेलीग्राफ के आविष्कार ने संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला दिए, जिससे आज हमारे जेब और पर्स में आसानी से रखे शक्तिशाली कंप्यूटरों का विकास हुआ। इस प्रक्रिया में, जीवन स्तर में जबरदस्त वृद्धि हुई।

1870 के दशक में, एलिशा ग्रे और अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने स्वतंत्र रूप से ऐसे उपकरण डिजाइन किए जो विद्युत रूप से ध्वनि संचारित कर सकते थे। दोनों ने अपने-अपने प्रोटोटाइप टेलीफोन डिजाइनों को कुछ ही घंटों के अंतराल में पेटेंट कार्यालय में जमा कराया। बेल ने अपने टेलीफोन का पेटेंट पहले कराया और बाद में ग्रे के साथ कानूनी विवाद में विजयी हुए। आज बेल का नाम टेलीफोन के इतिहास का पर्याय बन गया है, जबकि ग्रे को लगभग भुला दिया गया है।

कौन थे ग्राहम बेल-

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल स्काटलैंड के एडिनबर्ग में हुआ था। वे बचपन से ही ध्वनि के अध्ययन में लीन थे। उनके पिता, चाचा और दादा बधिरों के लिए वाक कला और वाक चिकित्सा के विशेषज्ञ थे। यह माना जाता था कि कालेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद बेल भी अपने परिवार के नक्शेकदम पर चलेंगे। लेकिन बेल के दो अन्य भाइयों की तपेदिक से मृत्यु हो जाने के बाद, बेल और उनके माता-पिता ने 1870 में कनाडा में प्रवास करने का निर्णय लिया।

ओंटारियो में कुछ समय रहने के बाद, बेल दंपति बोस्टन चले गए जहां उन्होंने बधिर बच्चों को बोलना सिखाने में विशेषज्ञता प्राप्त वाक चिकित्सा केंद्र स्थापित किए। उन्होंने ध्वनि के अपने अध्ययन को जारी रखा। बेल की अटूट वैज्ञानिक जिज्ञासा ने फोटोफोन के आविष्कार , थामस एडिसन के फोनोग्राफ में महत्वपूर्ण व्यावसायिक सुधारों और राइट बंधुओं द्वारा किटी हाक में अपना विमान लांच करने के मात्र छह वर्ष बाद ही अपनी खुद की उड़ने वाली मशीन के विकास को जन्म दिया। उन्होंने धातु डिटेक्टर का आविष्कार किया।

टेलीग्राफ और टेलीफोन दोनों ही तार आधारित विद्युत प्रणालियाँ हैं। अलेक्जेंडर ग्राहम बेल की टेलीफोन की सफलता टेलीग्राफ में सुधार करने के उनके प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम थी। जब उन्होंने विद्युत संकेतों के साथ प्रयोग करना शुरू किया, तब तक टेलीग्राफ लगभग 30 वर्षों से संचार का एक स्थापित माध्यम बन चुका था। हालाँकि टेलीग्राफ एक अत्यंत सफल प्रणाली थी, लेकिन यह मूल रूप से एक समय में केवल एक संदेश भेजने और प्राप्त करने तक ही सीमित थी।

ध्वनि की प्रकृति के बारे में बेल के व्यापक ज्ञान और संगीत की उनकी समझ ने उन्हें एक ही तार पर एक साथ कई संदेश भेजने की संभावना पर विचार करने में सक्षम बनाया।

अक्टूबर 1874 तक, बेल का शोध इतना आगे बढ़ चुका था कि वे अपने भावी ससुर, बोस्टन के वकील गार्डिनर ग्रीन हबर्ड को एक से अधिक टेलीग्राफ की संभावना के बारे में बता सके। हबर्ड, जो उस समय वेस्टर्न यूनियन टेलीग्राफ कंपनी के पूर्ण नियंत्रण से नाराज थे, ने तुरंत इस एकाधिकार को तोड़ने की क्षमता को पहचाना और बेल को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की।

हर्बर्ट और अन्य समर्थकों के आग्रह पर वाटसन हार्मोनिक टेलीग्राफ पर काम कर रहे थे, जबकि बेल ने मार्च 1875 में गुप्त रूप से स्मिथसोनियन संस्थान के सम्मानित निदेशक जोसेफ हेनरी से मुलाकात की, जिन्होंने बेल के टेलीफोन संबंधी विचारों को सुना और उन्हें प्रोत्साहित किया। हेनरी की सकारात्मक राय से प्रेरित होकर, बेल और वाटसन ने अपना काम जारी रखा।

जून 1875 तक, विद्युत द्वारा ध्वनि संचारित करने वाले उपकरण के निर्माण का लक्ष्य साकार होने के कगार पर था। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया था कि विभिन्न स्वरों से तार में विद्युत धारा की तीव्रता में परिवर्तन होता है। इसलिए, सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें केवल एक कार्यशील ट्रांसमीटर बनाने की आवश्यकता थी जिसमें विद्युत धाराओं को परिवर्तित करने में सक्षम झिल्ली हो और एक रिसीवर जो इन परिवर्तनों को श्रव्य आवृत्तियों में फिर से उत्पन्न कर सके।

2 जून, 1875 को, हार्मोनिक टेलीग्राफ पर प्रयोग करते समय, वैज्ञानिकों ने संयोगवश यह खोज की कि तार के माध्यम से ध्वनि का संचरण संभव है। वाटसन एक ट्रांसमीटर के चारों ओर लिपटी रीड को ढीला करने की कोशिश कर रहे थे, तभी गलती से उनसे वह रीड निकल गई। उस क्रिया से उत्पन्न कंपन तार के माध्यम से दूसरे कमरे में स्थित एक अन्य उपकरण तक पहुंच गई, जहां बेल काम कर रहे थे।

बेल को जो ट्वैंग की आवाज सुनाई दी, वही उनके और वाटसन के लिए अपने काम को गति देने की प्रेरणा बन गई। उन्होंने अगले साल भी काम जारी रखा। बेल ने अपनी डायरी में उस महत्वपूर्ण क्षण का वर्णन किया—मैंने एम में चिल्लाकर यह वाक्य कहा—श्रीमान वाटसन, यहां आइए—मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मुझे खुशी हुई कि वे आए और उन्होंने कहा कि उन्होंने मेरी बात सुन ली है और समझ ली है।

पहली काल अभी-अभी की गई थी, जो टेलीफोन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण था। टेलीफोन नेटवर्क का जन्म हुआ।

बेल ने 7 मार्च, 1876 को अपने उपकरण का पेटेंट कराया और यह तेजी से फैलने लगा। अगले वर्ष, बोस्टन और प्रोविडेंस, रोड आइलैंड के बीच टेलीफोन सेवा स्थापित हो गई थी। न्यूयॉर्क और शिकागो के बीच सेवा 1892 में और न्यूयॉर्क और बोस्टन के बीच 1894 में शुरू हुई। अंतरमहाद्वीपीय सेवा 1915 में शुरू हुई।

बेल ने 1877 में अपनी बेल टेलीफोन कंपनी की स्थापना की। जैसे-जैसे उद्योग का तेजी से विस्तार हुआ, बेल ने तुरंत अपने प्रतिस्पर्धियों को खरीद लिया। कई विलयों के बाद, अमेरिकन टेलीफोन एंड टेलीग्राफ कंपनी—जो आज की एटीएंडटी की पूर्ववर्ती कंपनी है—की स्थापना 1880 में हुई। चूंकि बेल का टेलीफोन प्रणाली से संबंधित बौद्धिक संपदा और पेटेंट पर नियंत्रण था, इसलिए एटीएंडटी का इस नए उद्योग पर वस्तुतः एकाधिकार था। इसने 1984 तक अमेरिकी टेलीफोन बाजार पर अपना नियंत्रण बनाए रखा।

पहला नियमित टेलीफोन एक्सचेंज 1878 में कनेक्टिकट के न्यू हेवन में स्थापित किया गया था। शुरुआती टेलीफोन ग्राहकों को जोड़े में किराए पर दिए जाते थे। ग्राहक को दूसरे से जुड़ने के लिए अपनी खुद की लाइन बिछानी पड़ती थी। 1889 में, कैनसस सिटी के अंतिम संस्कार व्यवसायी अल्मन बी. स्ट्रॉगर ने एक ऐसा स्विच बनाया जो रिले और स्लाइडर का उपयोग करके एक लाइन को 100 लाइनों में से किसी से भी जोड़ सकता था। स्ट्रॉगर स्विच, जैसा कि इसे बाद में जाना गया, 100 से अधिक वर्षों बाद भी कुछ टेलीफोन कार्यालयों में उपयोग में था। स्ट्रॉगर को 11 मार्च, 1891 को पहले स्वचालित टेलीफोन एक्सचेंज के लिए पेटेंट जारी किया गया था। स्ट्रॉगर स्विच का उपयोग करने वाला पहला एक्सचेंज 1892 में ला पोर्ट, इंडियाना में खोला गया था। शुरुआत में, ग्राहकों के टेलीफोन पर एक बटन होता था जिसे टैप करके आवश्यक संख्या में पल्स उत्पन्न की जाती थीं। फिर 1896 में स्ट्रॉगर के एक सहयोगी ने रोटरी डायल का आविष्कार किया, जिसने बटन का स्थान ले लिया। 1943 में, फिलाडेल्फिया रोटरी और बटन दोनों प्रकार की सेवा बंद करने वाला अंतिम प्रमुख क्षेत्र था।

एटीएंडटी की विनिर्माण सहायक कंपनी वेस्टर्न इलेक्ट्रिक के शोधकर्ताओं ने 1940 के दशक की शुरुआत से ही टेलीफोन कनेक्शन शुरू करने के लिए पल्स के बजाय टोन का उपयोग करने का प्रयोग किया था, लेकिन 1963 तक ड्यूल-टोन मल्टीफ्रीक्वेंसी सिग्नलिंग, जो भाषण के समान आवृत्ति का उपयोग करती है, व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य नहीं हो पाई थी। एटीएंडटी ने इसे टच-टोन डायलिंग के रूप में पेश किया और यह जल्दी ही टेलीफोन प्रौद्योगिकी में अगला मानक बन गया। 1990 तक, अमेरिकी घरों में रोटरी-डायल माडल की तुलना में पुश-बटन फोन अधिक आम हो गए थे।

1970 के दशक में, पहले ताररहित फोन पेश किए गए, जो टेलीफोन के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण मोड़ था।

1986 में, संघीय संचार आयोग ने ताररहित फोन के लिए 47 से 49 मेगाहर्ट्ज की आवृत्ति सीमा प्रदान की। अधिक आवृत्ति सीमा प्रदान करने से ताररहित फोन में कम हस्तक्षेप होने लगा और उन्हें चलाने के लिए कम बिजली की आवश्यकता होने लगी। 1990 में, एफसीसी ने ताररहित फोन के लिए 900 मेगाहर्ट्ज की आवृत्ति सीमा प्रदान की।

1994 में डिजिटल कार्डलेस फोन पेश किए गए, जिसके बाद 1995 में डिजिटल स्प्रेड स्पेक्ट्रम (डीएसएस) आया। इन दोनों विकासों का उद्देश्य कॉर्डलेस फोन की सुरक्षा बढ़ाना और फोन पर होने वाली बातचीत को डिजिटल रूप से प्रसारित करके अनचाही जासूसी को कम करना था।

पहला टेलीफोन कॉल 10 मार्च, 1876 को हुआ , स्काटलैंड में जन्मे आविष्कारक को उपकरण का पेटेंट मिलने के कुछ दिनों बाद। गलती से अपने ऊपर बैटरी एसिड गिरा लेने के बाद, बेल ने अपने सहायक को प्रसिद्ध वाक्य मिस्टर वाटसन, इधर आओ - मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ! कहकर बुलाया।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। फोन का आविष्कार सबसे पहले किसने किया, इस पर विवाद जारी है । हालांकि बेल ने पहले पेटेंट को लेकर अदालती मुकदमों की श्रृंखला जीत ली , फिर भी कुछ इतिहासकार इसका श्रेय एलीशा ग्रे या एंटोनियो मेउची को देते हैं, जो दोनों ही इसी तरह के उपकरणों पर काम कर रहे थे ।

शुरुआत में फोन एक अनोखी वस्तु के रूप में इस्तेमाल होते थे, जिन्हें केवल राजाओं और रानियों को ही दिखाया जाता था ।

1998 में इस तकनीक ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की, जब अमेरिका में हर पुरुष, महिला और बच्चे के पास एक फोन था।

यह ट्रिमलाइन फोन दिसंबर 1986 में लॉन्च हुआ था। यह बात अजीब लग सकती है, लेकिन 1980 के दशक की शुरुआत तक कई उपभोक्ताओं को एटी एंड टी से अपने फोन किराए पर लेने पड़ते थे। तब तक, कंपनी का अमेरिका के अधिकांश फोन सिस्टम पर एकाधिकार था। और कई राज्यों में, एटी एंड टी ग्राहकों को केवल फोन किराए पर देती थी।

1983 में यह स्थिति बदल गई, जब अमेरिकी सरकार ने एटी एंड टी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। देश के सभी हिस्सों में उपभोक्ताओं के पास अचानक अपना फोन खरीदने का विकल्प आ गया।

कीमतें इतनी कम हो गई हैं कि संघीय संचार आयोग ने 2006 में लंबी दूरी की कॉलों की लागत का हिसाब रखना बंद कर दिया। दशकों तक फोन कॉल की लागत का रिकॉर्ड रखने के बाद, आयोग ने बताया कि 2006 में लंबी दूरी की कॉल की औसत लागत मात्र 6 सेंट प्रति मिनट थी। चूंकि अब ज्यादातर लोग प्रति मिनट के हिसाब से भुगतान नहीं करते हैं, इसलिए आज फोन पर बात करने का एक अतिरिक्त मिनट लगभग मुफ्त है।

शुरुआती मोबाइल फोन रेडियो-नियंत्रित उपकरण थे जिन्हें वाहनों के लिए डिज़ाइन किया गया था। वे महंगे और बोझिल थे, और उनकी रेंज बेहद सीमित थी। 1980 तक, इसे पहले सेलुलर नेटवर्क द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।

मोबाइल क्रांति--

इसके बाद मोबाइल की क्रांति ने जन्म लिया। मोबाइल कैसे बनाया इसके बारे में सबसे पहले

मोटोरोला के इंजीनियर मार्टिन कूपर थे। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उनका प्रोजेक्ट इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी आविष्कारों में से एक बन जाएगा। वे मोबाइल फोन से काल करने वाले पहले व्यक्ति थे। वर्षों तक, इस इंजीनियर ने विश्व में अद्वितीय नवाचारों पर शोध और विकास किया। 17 अक्टूबर 1973 को, वे रेडियो टेलीफोन सिस्टम, जो आज भी लोकप्रिय टेलीफोन सिस्टम है, को बनाने में सफल हुए।

इस टेलीफोन प्रणाली की बदौलत कूपर डायनाटैक 8000 मोबाइल फोन से पहला मोबाइल कॉल करने में सक्षम हुए। यह पहला संचार न्यूयॉर्क की एक सड़क से शुरू हुआ और एटी एंड टी में इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर और उनके सबसे बड़े तकनीकी प्रतिद्वंद्वी जोएल एंगेल को संबोधित था।

इस पहले माडल का वजन 1.1 किलोग्राम था और आज के फोनों की तुलना में काफी मोटा था। पहले मोबाइल फोन में केवल 30 मिनट का टाक टाइम मिलता था और ठीक से काम करने के लिए इसे 10 घंटे चार्ज करने की आवश्यकता होती थी। हालांकि इसका आकार और तकनीक बहुत कार्यात्मक नहीं थी, फिर भी उपयोगकर्ता को कॉल करने के लिए लैंडलाइन से जुड़े रहने की आवश्यकता नहीं थी। लान्च के एक साल बाद, दुनिया भर में लगभग 3 लाख लोगों के पास डायनाटैक 8000 था।

हाल के वर्षों में तकनीकी प्रगति, विशेष रूप से दूरसंचार अवसंरचनाओं में, जैसे कि 5 प्रतिशत मोबाइल नेटवर्क का विकास ने इस आविष्कार को आज के स्मार्ट उपकरणों या स्मार्टफोन में तब्दील कर दिया है। वर्तमान में, एक ही टर्मिनल पहले से ज्ञात सुविधाओं के अलावा कई अन्य कार्य भी कर सकता है। दुनिया में कहीं भी कॉल करना और प्राप्त करना, फोटो और वीडियो कैमरा, कैलकुलेटर या डायरी। मोबाइल फोन की बदौलत उपयोगकर्ता इंटरनेट ब्राउज़ कर सकते हैं, वीडियो गेम खेल सकते हैं, नए लोगों से मिल सकते हैं, अपनी पसंदीदा फिल्मों देख सकते हैं, अद्यतन मानचित्र प्राप्त कर सकते हैं और अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए दिशा-निर्देशों का पालन कर सकते हैं, गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा अपाइंटमेंट ले सकते हैं और यहां तक कि अपना काम भी अपने साथ कहीं भी ले जा सकते हैं।

मोबाइल फोन का प्रचलन 1990 के दशक तक पूरी तरह से नहीं हुआ था। 1990 में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 11 मिलियन थी। वीआर सोशल और हूट्सुइट के साथ साझेदारी में प्रकाशित डेटा ईपोर्टल की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार , विश्व भर में 5 बिलियन से अधिक लोग मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं, जो विश्व की जनसंख्या का 68 प्रतिशत है। इसके अलावा, आंकड़े बताते हैं कि उपयोगकर्ता अपने जागने के समय का 30 प्रतिशत इन उपकरणों का उपयोग करने में व्यतीत करते हैं।

मोटोरोला की सफलता के बाद, प्रतिस्पर्धियों ने अपने प्रोटोटाइप मोबाइल फोन विकसित करना शुरू कर दिया। इसके बाद लोकप्रिय होने वाला अगला फोन नोकिया द्वारा निर्मित मोबिरा सिटीमैन था, जिसे 1987 में लांच किया गया था। इसका वजन 76 ग्राम था और इसमें डायनाटैक की तुलना में कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए थे। एक साल बाद, सैमसंग ने अपना पहला एनालाग डिस्प्ले वाला मोबाइल लांच किया।

धीरे-धीरे, मोबाइल फोन में नई-नई सुविधाएं जुड़ती गईं और इसका विकास होता चला गया। 3 दिसंबर 1992 को एक और महत्वपूर्ण घटना घटी- इतिहास का पहला टेक्स्ट मैसेज भेजा गया। वोडाफोन के एक डेवलपर ने क्रिसमस पार्टी के दौरान कंपनी के निदेशक रिचर्ड जार्विस को यह मैसेज भेजा। मैसेज में बस इतना लिखा था-मेरी क्रिसमस।

उस वर्ष स्पेन में मोबाइल फोन के उपयोग में जबरदस्त उछाल आया और इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या 180,000 तक पहुँच गई।

1995 के अंत तक, जब मोविस्टार ने परिचालन शुरू किया, तब तक इसके लगभग दस लाख ग्राहक हो चुके थे, जो पिछले वर्ष की तुलना में 125 प्रतिशत अधिक थे। उस समय, मोबाइल फोन एक दैनिक उपयोग का उपकरण बनने लगा था।

ताररहित फोन के बाद, पहला मोबाइल फोन जिसे एप्लिकेशन और टच स्क्रीन वाला स्मार्टफोन कहा जा सकता है, 1994 में बनाया गया था: आईबीएम साइमन, हालांकि यह नवीनता बहुत लोकप्रिय नहीं हुई। इसके बाद स्लाइडर फोन आए, जैसे मोटोरोला स्टारटेक। इस क्लैमशेल डिवाइस में वाइब्रेशन की सुविधा दी गई थी। नोकिया कम्युनिकेटर 9000 को 1996 में बाजार में उतारा गया, जो कीबोर्ड और ईमेल, फैक्स, वर्ड प्रोसेसिंग आदि जैसे व्यावसायिक कार्यों वाला पहला मोबाइल फोन था। 1998 में सीमेंस आया, जो रंगीन स्क्रीन वाला पहला मॉडल था।

नोकिया 3310 को इतिहास का सबसे प्रतिष्ठित मोबाइल फोन माना जाता है, इसकी लंबी बैटरी लाइफ के कारण उपयोगकर्ता पूरे दिन बात कर सकते थे या डिवाइस को एक महीने तक स्टैंडबाय मोड में छोड़ सकते थे। कंपनी ने इसके 12.6 करोड़ से अधिक यूनिट बेचे।

2018 में, एक सरकारी सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग 55 प्रतिशत परिवार केवल मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं, जबकि 2005 में यह आंकड़ा 10 प्रतिशत से भी कम था। 36 प्रतिशत परिवारों के पास मोबाइल फोन और चालू लैंडलाइन दोनों हैं। सर्वेक्षण में शामिल लोगों में से केवल 5 प्रतिशत से कुछ अधिक ने कहा कि वे पूरी तरह से लैंडलाइन पर निर्भर हैं, जबकि 2005 में यह आंकड़ा एक तिहाई से अधिक था। शेष 3 प्रतिशत ने कहा कि उनके पास फोन नहीं है।

अकेले भार में हैं 117 करोड़ मोबाइल यूजर्स

मोबाइल छीन रहा है नींद और आंखों की रेशमी

अकेले भारत में 117 करोड़ मोबाइल यूजर्स हैं। मोबाइल का सीमित उपयोग करना चाहिए। याद रहे पूरे ही विश्व में करीब 500 करोड़ मोबाइल यूजर्स हैं। इससे सिद्ध होता है कि भारत के लोग मोबाइल के आदि होते जा रहे हैं।

मोबाइल कोरोना काल से हर जन के बहुत करीब पहुंच गया है।

विद्यार्थी और छोटे बच्चे भी अब अछूते नहीं हैं। अमन चैन एवं आंखों की रोशनी कम करने में मोबाइल का अहम योगदान है। कोरोना काल में जहां आनलाइन शिक्षण करवाया गया उसके बाद से मोबाइल की लत ऐसी पड़ी की जिसने सभी की नींद हराम कर दी है। कितने ही विद्यार्थियों की आंखें कमजोर हो चुकी हैं, चश्मे चढ़ चुके हैं परंतु अब एक ऐसी लत बन गई है कि मोबाइल से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि एक जमाना था जब मोबाइल नहीं होते थे और इंसान बहुत अमन चैन से जीता था, एक दूसरे के सहयोग में भागीदारी करता था, माता-पिता और परिवार के सदस्यों के समीप रहता था, उनसे खुलकर बातें करता था लेकिन अब तो ऐसा वक्त आ गया है कि किसी के पास मोबाइल के अलावा बातें करने का समय नहीं है और मोबाइल पर ही सुबह-शाम चिपके देखे जा सकते हैं। मोबाइल से जहां रेडिएशन निकलते हैं जो हानिकारक होते हैं। ये मस्तिष्क के कैंसर, उच्च रक्तचाप, हृदयघात जैसे रोगों में सहायक साबित होते हैं। ऐसे में मोबाइल जो परिवार के पैसे भी खर्च करवाता है इससे छुटकारा पाना बहुत जरूरी है। मोबाइल एक साधन है इसका जितनी आवश्यकता उतना ही प्रयोग किया जाना चाहिए अन्यथा यह हमारे लिए एक प्रमुख बुराई बनाकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि आज बच्चा रोता है तो उसे मोबाइल थमा दिया जाता है परंतु यह नहीं सोचते कि कितना घातक प्रभाव बच्चे की आंखों और शरीर पर डालेगा। यही कारण है कि हर इंसान बच्चा, जवान, बूढ़ा, स्त्री एवं पुरुष सभी के पास मोबाइल होता है और मोबाइल ने इंसान की सुख चैन अमन को छीनने का काम किया है। यह सत्य है कि मोबाइल से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है किंतु इसमें बुराइयां भी कम नहीं हैं। उन्होंने मोबाइल कम से कम प्रयोग करने, रात को सोते समय दूर रखने, हैंड फ्री मोड पर बातें करने की बात कही ताकि शरीर पर कम घातक प्रभाव पड़े। मोबाइल लत एक गंभीर समस्या के बारे में जागरूक किया, साथ ही उन्हें मोबाइल स्क्रीन पर समय न गवांकर शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक विकास हेतु प्रोत्साहित किया गया। टीम ने बताया कि मोबाइल की लत से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मोबाइल की स्क्रीन से निकलने वाली हानिकारक किरणें आंखों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। मोबाइल कोरोना काल से हर जन के बहुत करीब पहुंच गया है। विद्यार्थी और छोटे बच्चे भी अब अछूते नहीं हैं। अमन चैन एवं आंखों की रोशनी कम करने में मोबाइल का अहम योगदान है।

कोरोना काल में जहां आनलाइन शिक्षण करवाया गया उसके बाद से मोबाइल की लत ऐसी पड़ी की जिसने सभी की नींद हराम कर दी है। कितने ही विद्यार्थियों की आंखें कमजोर हो चुकी हैं, चश्मे चढ़ चुके हैं परंतु अब एक ऐसी लत बन गई है कि मोबाइल से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि एक जमाना था जब मोबाइल नहीं होते थे और इंसान बहुत अमन चैन से जीता था, एक दूसरे के सहयोग में भागीदारी करता था, माता-पिता और परिवार के सदस्यों के समीप रहता था, उनसे खुलकर बातें करता था लेकिन अब तो ऐसा वक्त आ गया है कि किसी के पास मोबाइल के अलावा बातें करने का समय नहीं है और मोबाइल पर ही सुबह-शाम चिपके देखे जा सकते हैं। मोबाइल से जहां रेडिएशन निकलते हैं जो हानिकारक होते हैं। ये मस्तिष्क के कैंसर, उच्च रक्तचाप, हृदयघात जैसे रोगों में सहायक साबित होते हैं। ऐसे में मोबाइल जो परिवार के पैसे भी खर्च करवाता है इससे छुटकारा पाना बहुत जरूरी है। मोबाइल एक साधन है इसका जितनी आवश्यकता उतना ही प्रयोग किया जाना चाहिए अन्यथा यह हमारे लिए एक प्रमुख बुराई बनाकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि आज बच्चा रोता है तो उसे मोबाइल थमा दिया जाता है परंतु यह नहीं सोचते कि कितना घातक प्रभाव बच्चे की आंखों और शरीर पर डालेगा। यही कारण है कि हर इंसान बच्चा, जवान, बूढ़ा, स्त्री एवं पुरुष सभी के पास मोबाइल होता है और मोबाइल ने इंसान की सुख चैन अमन को छीनने का काम किया है। यह सत्य है कि मोबाइल से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है किंतु इसमें बुराइयां भी कम नहीं हैं। मोबाइल कम से कम प्रयोग करने, रात को सोते समय दूर रखने, हैंड फ्री मोड पर बातें करने से ही शरीर पर कम घातक प्रभाव पड़े। मोबाइल जहां नुकसानदायक है वही बहुत से इसके लाभ भी है। जहां ज्ञानवृद्धि के लिए कभी बहुत अधिक दिक्कत आती थी आज पूरी दुनिया का ज्ञान मोबाइल के जरिए प्राप्त किया जा सकता है। एक अच्छा विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो अच्छे से अच्छा ज्ञान यहां से प्राप्त कर सकता है। ज्ञान गुरु से प्राप्त किया जाता था वह आज ज्ञान यहां से प्राप्त करके किया जा सकता है। यद्यपि गुरु का स्थान मोबाइल नहीं ले सकता परंतु ज्ञान को बढ़ाने में इसका अहम योगदान होता है। ऐसे में माता-पिता की देखरेख में यदि मोबाइल दिया जाए तो निसंदेह बच्चों के लिए लाभप्रद साबित हो सकता है। एक वक्त था जब बुजुर्ग संदेश को पहुंचाने के लिए चि_ी का उपयोग करते थे और उससे पहले तो बैलगाड़ी, ऊंट गाड़ी या अन्य साधन अपनाए जाते थे।

आजकल चाहे कितनी भी दूर कोई बैठा हो उसे संदेश पहुंचाने के लिए महज चंद सेकंड की आवश्यकता होती है। कितनी बड़ी विशेषता और लाभ है। पुराने वक्त में जहां लंबे समय बाद ही संदेश पहुंचे पाते थे, आजकल संदेश बहुत झट से आसानी से पहुंच जाते हैं। मोबाइल ने हमें बहुत लाभ दिए परंतु बहुत अधिक हानियां भी दी हैं। यदि संतुलित रूप से प्रयोग किया जाए तो निसंदेह मोबाइल एक अद्भुत चीज होगी वरना आने वाली पीढ़ियों की आंखें और दिमाग को इतना प्रभावित करेगा कि काम करना बंद कर देंगे। मोबाइल ने घड़ी, अलार्म, टार्च आदि रखने का रिवाज ही बंद कर दिया है।

जब बच्चा पैदा होता है तभी से देने लग गए हैं मोबाइल -

जो बच्चा छोटा होता है तभी से बच्चे को रोने से बचने के लिए मोबाइल फोन दिया जाता है। धीरे-धीरे बच्चा आदि हो जाता है और छोटा बच्चा ही फोन को देखता रहता है। एक और जहां मां-बाप यह समझते हैं कि बच्चा अब खुश है और वे अपना काम करते हैं, वहीं बच्चा मोबाइल देखते देखते छोटी उम्र से अपनी आंखें गंवाना शुरू कर देता है। चूंकि मोबाइल से हानिकारक रेडिएशन निकलती है वो शरीर के हर अंग पर प्रभाव डालती है। बच्चा इतना आदि हो जाता है कि फिर तो मोबाइल छीनते हैं तो रोने लग जाता है। बुरी आदत बन जाती है, घंटों रोता रहता है, तब मजबूरन मोबाइल फिर से देना पड़ता है। मोबाइल एक ऐसी लत बन गई है जो छोटे बड़े तथा किसी भी व्यक्ति को लगी देखी जा सकती है। लोग मलमूत्र त्यागते समय भी मोबाइल प्रयोग करते रहते हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं जहां मोबाइल प्रयोग नहीं हो रहा हो। जंगल हो चाहे घर हो, चाहे भेड बकरी चराने वाला व्यक्ति ही क्यों न हो सभी के हाथों में बड़े-बड़े मोबाइल होते हैं। कभी फोटो खींचने के लिए कैमरे प्रयोग किए जाते थे, आजकल मोबाइल में यह सुविधा सकारात्मक होने के कारण मोबाइल का ही प्रयोग करने लगे हैं। लोग कहीं जाकर भी वीडियो बना सकते हैं परंतु सबसे बड़ा कुप्रभाव इसका है कि आंखें चली जाना, कानों से कम सुनाई देना प्रमुख हैं।

आजकल तो लोग मोबाइल से ब्लूटूथ चलाते हैं, कानों में ब्लूटूथ ठूंसे रखते हैं और तब जाकर चलते-चलते, भागते या पढ़ते वक्त भी मोबाइल से गाने सुनते रहते हैं। आश्चर्य है कि मोबाइल के कितने आदि हो गए हैं कि एक मिनट और एक पलक झपकते जितने समय भी उसे नहीं छोड़ना चाहते।

आज जो बच्चा चंद दिन पहले जन्मा है उसी को मोबाइल दे दिया तो 50 साल तक मोबाइल देखते देखते कैसे बच पाएगा?

कितने ही रोग उसमें हो जाएंगे और आने वाली पीढ़ी कई रोगों से पीड़ित होगी। मोबाइल अब तो सस्ता हो गया है, पहले महंगे होते थे। अगर आप मोबाइल का रेट बढ़ा भी दिया जाए तो लोग फिर भी इसे खरीद देंगे क्योंकि आदि हो गए हैं। जिस प्रकार बीड़ी, सिगरेट, शराब के लोग आदि है उसी प्रकार फोन के आती है। मोबाइल फोन से जो रेडिएशन निकलती है वह हर अंग को छूकर निकलती है जिससे शरीर पर कुप्रभाव पड़ना निश्चित और लाजमी है। फोन की लत को छुड़ाना भी तो आसान काम नहीं रहा है। लोग शराब, बीड़ी, सिगरेट पीना छोड़ सकते हैं लेकिन फोन का उपयोग करना नहीं छोड़ते। एक वक्त था जब एक जीबी डाटा पूरे महीने तक चलाया जाता था। ऐसे में कम डाटा प्रयोग करने का अर्थ है मोबाइल का कम उपयोग करना। अब तो अनलिमिटेड डाटा कंपनियों द्वारा दिए जा रहे हैं जिसके चलते दिन रात फोन देखना आदत सी बन गई है और कहीं भी जाकर देखें बस मोबाइल पर बैठे नजर आते हैं। कितनी हानिकारक किरणें इनसे निकलती है और जो आसपास और लोगों पर कुप्रभाव डालती है। लेकिन लोग आंखें गंवाने, कान खराब होने के बावजूद भी फोन से हटाना नहीं चाहते। डाक्टर भी यदि यूं कहे कि फोन कुछ दिनों के लिए छोड़ दिया जाए तो शायद ही छोड़ पाएंगे। मोबाइल इसलिए भी घातक बन गया है कि अधिकांश दुर्घटनाएं मोबाइल के कारण हो रही है। मोबाइल चलाते-चलाते गाड़ियां भी चला रहे हैं जिसका परिणाम बहुत भयंकर साबित होता है। मोबाइल को देखते देखते रास्ते में चल रहे हैं, पीछे से कोई हार्न भी दे तो उनको सुनाई देता नहीं देता और अंततः कोई दुर्घटना हो जाती है। देखने में आया कि मोबाइल का प्रयोग करते-करते रास्ते में चल रहे हैं लोग नाली व गड्ढे आदि में गिर जाते हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या है लोग एक साथ कई कई काम करते हैं। पढ़ने के साथ-साथ फोन भी सुनते रहते हैं। यदि मलमूत्र त्याग रहे हैं तो भी फोन प्रयोग करते खाना खा रहे हैं तो भी मोबाइल प्रयोग करते हैं।

ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां फोन प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि फोन उनकी नस-नस में जगह बना चुका है। अब तो मोबाइल से बचना बहुत कठिन हो गया है। लोग फोन के इतने आदि हो गए हैं कि उनसे फोन छुड़ाया जाए तो आत्महत्या तक करने की नौबत आ जाती है।

चिड़चिड़ा स्वभाव तो हो ही जाता है वही बच्चे जो पढ़ाई में बहुत अच्छे होते थे आज इसलिए पिछड़ते जा रहे हैं क्योंकि वह मोबाइल का प्रयोग कर रहे हैं।

मोबाइल प्रयोग करने से दिमाग काम करना बंद कर देता है और जितनी याददाश्त होनी चाहिए वह कम हो जाती है। आज मोबाइल सिर चढ़कर बोलता है लेकिन मोबाइल की जितनी हानियां हैं वो गिनाएं तो बहुत अधिक हो जाएंगी। इंसान मोबाइल के कारण ही बड़ी से बड़ी गलती कर बैठता है। मोबाइल के कारण है दुर्घटनाएं, असामयिक मौत तथा अनेक बुरे परिणाम सामने आते हैं।

-डा. होशियार सिंह यादव



लेखक परिचय

नाम – डा. होशियार सिंह यादव
मोहल्ला-मोदीका, वार्ड नंबर 01
कनीना-123027 जिला महेंद्रगढ़ हरियाणा





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि



आ... **डा. होशियार सिंह यादव** ...जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

